अधिकतम सामाजिक लाभ सिद्धान्त के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं :

(i) उपयोगिता तथा अनुपयोगिता की परिमाणात्मक माप के लिए कोई वस्तुनिष्ठ (Objective) मापदण्ड नहीं है।

(ii) यह सिद्धान्त व्यय सम्बन्धी विभिन्न प्रोग्रामों की कार्यदक्षता को निर्धारित करने का कोई ठोस मापदण्ड नहीं बताता है और न ही विभिन्न करदाताओं के मध्य कर के अंशदान के आवंटन का तरीका ही। इस सिद्धान्त की व्याख्या करते समय मान लिया जाता है कि विभिन्न करदाताओं पर इस प्रकार कर लगाया जाता है कि उन्हें कर के भुगतान करने में न्यूनतम समग्र त्याग (Least aggregate sacrifice) करना पड़ता है। दूसरी ओर, लोक व्यय के सम्बन्ध में यह मान लिया जाता है कि विभिन्न मदों पर लोक व्यय का आवंटन इस प्रकार होता है कि व्यय के प्रत्येक मद से समान सीमान्त लाभ (उपयोगिता) मिलता है।

(iii) इस सिद्धान्त के साथ विधि सम्बन्धी (Methodological) समस्या भी है। लोक वस्तु के लाभ संयुक्त रूप से मिलते हैं, जबकि कर के भुगतान करने में निहित त्याग का अनुभव पृथक्-पृथक् करदाताओं को पृथक्-पृथक् होता है। समष्टि उपयोगिता तथा व्यष्टि अनुपयोगिता को एक ही सिक्के के दो पक्षों के रूप में देखना प्रणाली-सम्बन्धी भूल (Methodological error) है।

(iv) कोई भी वास्तविक अर्थव्यवस्था स्थिर (Static) नहीं है। इसमें निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं, लेकिन अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धान्त स्थैतिक (Static) दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

अधिकतम सामाजिक लाभ की जांच (Test of Maximum Social Advantage)

डाल्टन इस सिद्धान्त के दोषों से अनभिज्ञ नहीं हैं। इसलिए वे इन दोषों को दूर करने के लिए कुछ वस्तुनिष्ठ कसौटियों (Objective tests) की बात करते हैं। प्रमुख कसौटियां निम्नलिखित हैं :

(i) **वाह्य आक्रमण से रक्षा तथा आन्तरिक शान्ति व सुरक्षा**—कोई भी राज्य अपने अस्तित्व को बनाए नहीं रख सकता है यदि वह बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा नहीं कर सकता है तथा देश के अन्दर कानून व विधि व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकता है। इन दोनों के बिना अधिकतम सामाजिक लाभ की बात नहीं की जा सकती है।

(ii) **आर्थिक कल्याण में वृद्धि**—सामाजिक लाभ का आर्थिक पहलू भी है। इस पहलू पर विचार करते हुए डाल्टन ने बताया कि आर्थिक कल्याण में वृद्धि के लिए निम्न दो शर्तों का पालन जरूरी है :

(क) **उत्पादन शक्ति में सुधार**—ऐसा तभी होता है जब समान प्रयत्न से प्रति व्यक्ति उत्पत्ति में वृद्धि होती है या कम प्रयत्न से समान उत्पत्ति मिलती है। साथ ही यह भी देखना है कि जिन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है, उनकी गुणवत्ता (Quality) में सुधार होता है। उत्पादन के संगठन में भी सुधार की आवश्यकता है ताकि राष्ट्रीय साधनों का न्यूनतम अपव्यय हो। उत्पादन के ढांचे में भी सुधार की जरूरत है ताकि अनिवार्य वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन मिले तथा अनावश्यक वस्तुओं का उत्पादन निरुत्साहित हो।

(ख) **वितरण में सुधार**—इस सुधार के दो पहलू हैं। प्रथम, आय तथा सम्पत्ति के वितरण की असमानता में कमी लाना और दूसरे, विभिन्न कार्यों में व्यक्तियों की आय में होने वाले उतार-चढ़ाव की मात्रा कम करना ताकि आय में अधिक स्थिरता कायम हो सके।

Scanned with CamScanner

(iii) **भावी पीढ़ी के हितों की रक्षा**—व्यक्ति भविष्य की तुलना में वर्तमान को अधिक महत्व देता है, किन्तु राज्य के साथ ऐसी बात नहीं है। व्यक्ति मर जाते हैं, लेकिन व्यक्तियों के समूह, जिसे समाज कहा जाता है, का अस्तित्व समाप्त नहीं होता। इसलिए राज्य को भी वर्तमान की अपेक्षा भविष्य को अधिक महत्व देना पड़ता है। ऐसी कोई भी नीति उचित नहीं कहला सकती जिसके कारण भविष्य में उत्पादन क्षमता का ह्रास हो तथा भावी पीढ़ी को हानि उठानी पड़े।

उर्सला हिक्स की कसौटियां (Ursula Hicks' Tests)

लोक वित्त की क्रियाओं से निबल सामाजिक लाभ (Net social benefit) में वृद्धि होती है या नहीं, इसकी जांच के लिए श्रीमती हिक्स ने दो तरह की कसौटियों को विकसित किया। एक को उन्होंने इष्टतम उत्पत्ति (Production optimum) कहा तथा दूसरी को इष्टतम उपयोगिता (Utility optimum)। इष्टतम उत्पत्ति उस समय प्राप्त होती है जब उत्पादक साधनों के पुनः आवंटन से एक वस्तु के उत्पादन को तब तक बढ़ाया नहीं जा सकता जब तक किसी दूसरी वस्तु के उत्पादन में कमी न हो। ऐसी इष्टतम उत्पत्ति उस समय मिलती है जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार की स्थिति में रहती है तथा मौजूदा उत्पादन क्षमता की कोई बर्बादी नहीं होती है। इसे पैरेटो इष्टतम कल्याण (Pareto optimum welfare) की एक शर्त के रूप में देखा जा सकता है।

हिक्स की इष्टतम उपयोगिता का सम्बन्ध राष्ट्रीय उत्पत्ति की संरचना (composition) से है। इस संरचना में परिवर्तन के द्वारा सामाजिक लाभ में वृद्धि या कमी लायी जा सकती है। इष्टतम उपयोगिता की स्थिति उस समय आती है जब राष्ट्रीय उत्पत्ति की संरचना में किसी परिवर्तन के द्वारा समाज की कुल उपयोगिता में वृद्धि नहीं की जा सकती है। सैद्धान्तिक रूप से परिष्कृत होते हुए भी हिक्स की कसौटियों का व्यावहारिक महत्व नगण्य है।

Scanned with CamScanner